32

राज्य के और दृष्टांत

(13:24-52)

राज्य के अगले दृष्टांतों में इस्तेमाल की गई चीज़ें यीशु के सुनने वालों के लिए बिल्कुल स्पष्ट और परिचित होनी थीं।

स्वर्ग के राज्य पर तीन अतिरिक्त दृष्टांत (13:24-33)

जंगली बीज (13:24-30)

[24]यीशु ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया: ''स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। [25]पर जब लोग सो रहे थे तो उस का शत्रु आकर गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया। [26]जब अंकुर निकले और बालें लगीं, तो जंगली दाने के पौधे भी दिखाई दिए। [27]इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उससे कहा, 'हे स्वामी, क्या तूने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? फिर जंगली दाने के पौधे उस में कहां से आए?' [28]उस ने उनसे कहा, 'यह किसी शत्रु का काम है। दासों ने उससे कहा, 'क्या तेरी इच्छा है कि हम जाकर उन को बटोर लें?' [29]उस ने कहा, 'नहीं, ऐसा न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए उनके साथ गेहूं भी उखाड़ लो। [30]कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कटनी के समय मैं काटने वालों से कहूंगा कि पहिले जंगली दाने के पौधे बटोर कर जलाने के लिए उनके गट्ठे बांध लो, और गेहूं को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो।' ''

आयत 24. मत्ती उस दृश्य में वापस लौट आया जहां, यीशु नाव में उपदेश दे रहा था (13:1, 2)। बोने वाले की कहानी के बाद (13:3-9), **यीशु ने भीड़ को एक और दृष्टांत दिया** (देखें 13:31, 33)। इस अध्याय के अन्य दृष्टांतों की तरह यह दृष्टांत भी **स्वर्ग के राज्य** से सम्बन्धित था (13:31, 33, 44, 45, 47)। इस दृष्टांत में ज़मीदार ने **अपने खेत में अच्छा बीज बोया;** आयत 25 संकेत देती है कि यह बीज ''गेहूं'' था। उस ने अच्छा बीज बोया था, इस कारण तर्कसंगत रूप से वह अच्छी फसल की कटाई की उम्मीद कर रहा था। तौभी ऐसा हुआ नहीं।

आयत 25. यह तथ्य कि दास **सो रहे थे**, यह संकेत नहीं देता कि वे आलसी थे; वे रात को सो गए हो सकते हैं। उनके सोने के बाद **शत्रु** को आकर बोई गई फसल को खराब करने का मौका मिल गया। **जंगली दाने** हानि पहुंचाने वाली जंगली बूटी हो सकती है जिसे ''डार्नेल'' कहा गया है (देखें NEB), जो प्राचीन निकटपूर्व में बहुतायत में होती थी। यह विशेष किस्म जहरीली राई घास ''रोएंदार डार्नेल'' हो सकती है। डार्नेल के साथ मिली गेहूं खा लेने पर व्यक्ति

बीमार हो जाता है।

बदला लेने के कार्य के रूप में शत्रु के खेत में जंगली बीज बोना यीशु के समय में शैतानी होती थी और रोमी कानून द्वारा इस पर पाबन्दी लगाई गई थी।[1] सुनने वाले निश्चय ही इस दृष्टांत की कहानी की बात से चौंक गए होंगे।

आयतें 26-28. जब अंकुर निकले और फसल के साथ **बालें लगीं**, तो जंगली दाने के पौधे भी दिखाई दिए। आरम्भ में जंगली बीज को गेहूं से अलग नहीं किया जा सकता था। परन्तु जब उनकी बालें निकलने लगीं तो फसल की जानकारी रखने वालों को उनमें अन्तर साफ दिखाई देने लगा। जंगली बीज का होना कोई नई बात नहीं होगी, परन्तु बहुत संख्या में इसने **दासों** को चकित कर दिया। जब उन्होंने अपने मालिक, **गृहस्थ** (*oikodespotēs*) को बताया तो उसे तुरन्त पता चल गया कि क्या हुआ है और उस ने कहा, **''यह किसी शत्रु का काम है**!'' दासों ने जंगली बीज को उखाड़ देना चाहा, परन्तु मालिक को यह समझ थी कि ऐसा गेहूं को हानि पहुंचाए बिना नहीं होगा। तब तक दोनों पौधों की जड़ें एक दूसरे से इतनी जुड़ गई होंगी कि जंगली बीज को निकालने का प्रयास गेहूं को भी नुकसान पहुंचा सकता है।

आयतें 29, 30. गृहस्थ यानी ज़मींदार का निर्णय समझदारी वाला था। उस ने दासों को फसल के पकने तक **जंगली दाने** और **गेहूं** दोनों को बढ़ने देने के लिए कहा। **कटनी के समय** उन्हें फसल काटने वालों के द्वारा अलग कर दिया जाना था। तब जंगली बीज को बांधकर आग में जला दिया जाना था और गेहूं को ज़मींदार के खेतों में इकट्ठा कर लिया जाना था (देखें 3:12; 6:26)।

जंगली बीज को गेहूं से अलग करने के तीन ढंग पाए जाते थे। (1) जब गेहूं जंगली बीज से बड़ा हो जाता तो इसे ऊपर से काट लिया जाता और फिर खेत को आग लगा दी जाती। (2) कटाई के समय जंगली बीज और गेहूं दोनों को अलग कर लिया जाता। गेहूं को पिसाई के लिए पूलों में बांध लिया जाता और जंगली बीज को इकट्ठा करके आग लगा दी जाती। (3) बुरे बीजों को अच्छी फसल पिसाने से पहले अच्छे बीजों से अलग कर दिया जाता। इनमें से दूसरा ढंग दृष्टांत वाले दासों ने इस्तेमाल में किया।

बाद में यीशु ने बीज बोने वाले के दृष्टांत की तरह इस दृष्टांत का अर्थ भी बताया (13:36-43)।

राई का बीज (13:31, 32)

[31]उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया: ''स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। [32]वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग पात से बड़ा होता है; और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाश के पक्षी आकर उस की डालियों पर बसेरा करते हैं।''

आयतें 31, 32. अगले **दृष्टांत** में **स्वर्ग के राज्य** की तुलना **राई के दाने** से की गई है। यह बीज मूलतया **सब बीजों से छोटा** नहीं होता, परन्तु यह ''जड़ी-बूटी'' का सबसे छोटा बीज है। उदाहरण के लिए जंगली आर्किड और सरू के बीज आकार में छोटे होते हैं। यीशु राई के

बीज की तुलना सभी पौधों के बीजों से नहीं, बल्कि केवल फलस्तीन की जड़ी-बूटियों से कर रहा था। राई का बीज अपने छोटे आकार के लिए (''राई के बीज की तरह छोटा'') मुहावरे के रूप में इस्तेमाल होने वाला शब्द था।[2] अपनी शिक्षा में यीशु ने अन्य अवसरों पर इस उदाहरण का इस्तेमाल किया (17:20; लूका 17:6)।

राई का बीज ऐसा है, जो विशेषकर फलस्तीन के शुष्क वातावरण में उगता है। अन्य इलाकों में उगने वाले बीजों के विपरीत, समुद्र के निकट उगने वाली किस्म इतनी बड़ी हो जाती है कि **पेड़** ही लगता है।[3] डब्ल्यू. एफ़. अल्ब्राइट और सी. एस. मन ने लिखा है, ''गलील की झील के पास राई की झाड़ी आमतौर पर दस फुट तक ऊंची हो जाती है।''[4] अच्छी देखभाल होने पर यह पन्द्रह फुट तक ऊंची हो सकती थी। राई की इस किस्म की **डालियां** होती हैं जो वर्ष के कुछ समयों में इतनी कठोर हो जाती हैं कि वे **पक्षियों** के लिए आसानी से बसेरा बन सकती हैं।

''पेड़'' के रूप में राई के पौधे की अतिश्योक्ति की बात पुराने नियम के हवालों से मिलती है जो राज्यों को पेड़ों से जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए यहेजकेल की पुस्तक में परमेश्वर ने देवदार पेड़ की टहनी में से लेकर इसे ऊंचे पहाड़ पर लगाना था। यह ''उत्तम देवदार'' बन जाना था और पक्षियों ने आकर इसकी डालियों में घोंसले बनाने थे (यहेजकेल 17:22-24; देखें 31:2-18; दानिय्येल 4:10-12, 19-22)।

राई के बीज की तरह स्वर्ग के राज्य ने आरम्भ में छोटा होना था, परन्तु अन्त में इसने बड़ा बन जाना था। यीशु ने बारह प्रेरितों के साथ शुरू किया, परन्तु अन्त में उस का राज्य सारी पृथ्वी पर फैल जाना था (28:19; मरकुस 16:15)। आकाश के पक्षियों का इस्तेमाल कई बार यहूदी साहित्य में अन्यजातियों को दर्शाने के लिए किया जाता है।[5]

खमीर (13:33)

[33]उस ने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया: ''स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है, जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते-होते वह सब खमीरा हो गया।''

आयत 33. खमीर ब्रैड बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाली एक सामग्री है। यह अपने आप काम करता है। नये नियम के समयों में **स्त्री** आमतौर पर ब्रैड के गुंधे हुए आटे में से पकाने से पहले थोड़ा सा खमीरा आटा निकाल लेती और ब्रैड बनाने के समय वह बचाया हुआ खमीर नये आटे में गूंधने के समय मिला देती (देखें 1 कुरिन्थियों 5:6)।[6] यह अनुमान लगाया जाता है कि **तीन पसेरी आटा** (लगभग एक बुशेल) एक सौ लोगों का पेट भरने के लिए काफ़ी होता होगा।[7]

पवित्र शास्त्र में खमीर को आमतौर पर बुरे प्रभावों के साथ जोड़ा गया है (16:6-12; लूका 12:1; 1 कुरिन्थियों 5:6-8; गलातियों 5:9)। यहूदियों के लिए फसह को मनाने से पहले अपने घर से हर प्रकार का खमीर निकालकर इसे जला देना आवश्यक था! इसके अलावा मन्दिर में भेंट की गई अन्नबलि में किसी प्रकार का खमीर नहीं होना चाहिए था (लैव्यव्यवस्था 6:14-18)। यहां पर यीशु के मन में बुरे प्रभाव की बात नहीं थी, क्योंकि स्वर्ग के राज्य का संसार में सबसे सकारात्मक प्रभाव है।

यीशु ने इस दृष्टांत का अर्थ तो नहीं बताया, पर इसका उद्देश्य उस धन को दिखाना था, जिसमें राज्य अर्थात कलीसिया ने पूरे संसार में फैलना था। आटे में खमीर की तरह राज्य उस समय छिपा हुआ था। पिन्तेकुस्त के दिन औपचारिक रूप में इसकी स्थापना हो जाने के बाद, इसका प्रभाव शीघ्र ही पूरे रोमी साम्राज्य में फैल गया (रोमियों 10:18; कुलुस्सियों 1:23)। आटे में छिपे हुए खमीर की तरह स्वर्ग के राज्य ने आरम्भ में लगभग बिना किसी का ध्यान आकर्षित किए काम करना था; परन्तु फैल जाने के बाद इसका प्रभाव स्पष्ट हो गया।

एक विराम (13:34-43)

दृष्टांतों का उद्देश्य (13:34, 35)

[34]ये सब बातें यीशु ने दृष्टांतों में लोगों से कही और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था, [35]कि जो वचन भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो:

''मैं दृष्टान्त कहने को अपना मुंह खोलूंगा।
मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से
गुप्त रही हैं, प्रकट करूंगा।''

आयत 34. मसीह हर बात दृष्टांतों में नहीं करता था, परन्तु इस दिन उस ने कीं। मत्ती ने उस की बात पर ज़ोर देने के लिए इस सच्चाई को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से पेश किया है: **''ये सब बातें यीशु ने दृष्टांतों में लोगों से कहीं और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था''** (यूहन्ना 1:3 से तुलना करें)।

आयत 35. इस अध्याय में एक बार फिर यीशु के दृष्टांतों के उद्देश्य की बात की गई है। पहली घटना में मत्ती ने केवल यीशु के चेलों द्वारा पूछे गए उसके उत्तर की बात लिखी (13:10-17)। यहां मत्ती ने स्वयं यीशु के तरीके पर टिप्पणी की। उस ने ज़ोर देकर कहा कि सिखाने का उस का ढंग पुराने नियम की भविष्यवाणी का पूरा होना था **कि जो वचन भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो** वाक्य सुसमाचार के इस विवरण में मुख्य विषय बना रहता है (1:22 पर टिप्पणियां देखें)।[8]

भजन संहिता 78 जिसमें से यीशु ने उद्धृत किया, अपने परम्परागत लेखन में आसाप-का लिखा माना जाता है। आसाप दाऊद द्वारा ठहराया गया, प्रधान संगीतकार था और उसे ''दर्शी'' कहा गया है (1 इतिहास 16:4-7; 25:1, 2; 2 इतिहास 29:30)। यह परिचय आयत 35 में ''भविष्यवक्ता'' शब्द के साथ मेल खाता है।[9] भजन संहिता 78 में आसाप ने इस्राएल के इतिहास में से लिया और ''अपने सुनने वालों को उन चेतावनियों पर जो चुनी हुई जाति की पिछली असफलताओं से आनी थीं, ध्यान देने को बुलाया।''[10]

दृष्टांतों में बातें कहने का उद्धरण विशेषकर भजन संहिता 78:2 से लिया गया। पहली पंक्ति **''मैं दृष्टांत कहने को अपना मुंह खोलूंगा,''** सप्तति अनुवाद से मेल खाती है। परन्तु दूसरी पक्ति, **''मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रही हैं प्रकट करूंगा,''** एक

खुला अनुवाद है।[11] इस उद्धरण की मत्ती की प्रासंगिकता में ''गुप्त बातें'' ''राज्य के भेद'' हैं, जिनकी बात यीशु ने पहले की (13:11; देखें 1 कुरिन्थियों 2:7-10; इफिसियों 1:3-14; 3:9; कुलुस्सियों 2:2, 3)।

जंगली बीज के दृष्टांत की व्याख्या (13:36-43)

[36]''तब वह भीड़ को छोड़कर घर में आया, और उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, 'खेत के जंगली दाने का दृष्टान्त हमें समझा दे।' [37]उस ने उत्तर दिया, 'अच्छे बीज का बोने वाला मनुष्य का पुत्र है। [38]खेत संसार है, अच्छा बीज राज्य की सन्तान, और जंगली बीज दुष्ट की सन्तान हैं। [39]जिस शत्रु ने उनको बोया, वह शैतान है; कटनी जगत का अन्त है, और काटने वाले स्वर्गदूत हैं। [40]अतः जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसा ही जगत के अन्त में होगा। [41]मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करने वालों को इकट्ठा करेंगे, [42]और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे, जहां रोना और दांत पीसना होगा। [43]उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। जिसके कान हों, वह सुन ले।' ''

आयत 36. यीशु भीड़ को छोड़कर **घर** चला गया (13:1)। यह बात कफ़रनहूम की है, शायद पतरस के घर की या किसी अनाम चेले के घर के (देखें 4:13)। उस दृश्य में, **उसके चेले जंगली दाने के दृष्टांत** के अर्थ को जानने की इच्छा से उसके पास आए (देखें 13:24-30)।

आयतें 37-39. इन आयतों में यीशु ने दृष्टांत की रूपक की प्रकृति को दिखाते हुए अधिकतर मुख्य तत्वों को मिलाया।

1. ''**अच्छे बीज का बोने वाला मनुष्य का पुत्र है**।'' बीज बोने वाले के दृष्टांत की व्याख्या में (13:18-23), बोने वाले की पहचान नहीं है; परन्तु यहां पर यीशु ने स्पष्ट रूप में अपना नाम, बीज बोने वाले के रूप में ''मनुष्य का पुत्र'' बताया।

2. ''**खेत संसार है।**'' यह स्वर्ग के राज्य के दृष्टांतों में से एक है, इस कारण कई लोगों ने यह मान लिया है कि ''खेत'' जिसमें अच्छा बीज बोया गया था, कलीसिया है। परन्तु यीशु ने स्पष्ट कहा कि ''खेत संसार है,'' यानी धर्मियों और दुष्ट लोगों का मिला-जुला स्थान।

3. ''**अच्छा बीज राज्य की सन्तान**'' है। ''अच्छा बीज'' बीज बोने वाले के दृष्टांत की तरह ''राज्य का वचन'' नहीं है (13:19); यहां यह ''राज्य की सन्तान'' को दर्शाता है। मत्ती 8:12 में ''राज्य की सन्तान'' यहूदियों को कहा गया था, जो परम्परागत ढंग से राज्य के वारिस हैं, परन्तु जिन्होंने इसे ठुकरा दिया था। यहां यह वाक्यांश यीशु के विश्वासयोग्य चेलों के लिए है, जो सचमुच में परमेश्वर के राज्य के वारिस हैं।

4. ''**जंगली बीज दुष्ट की सन्तान हैं**।'' ये लोग शैतान के चेले हैं। यीशु ने दो अलग-अलग तरह की ''सन्तानों'' में स्पष्ट अन्तर किया, जिसमें या तो राज्य की सन्तान है या शैतान की सन्तान है।

5. ''**जिस शत्रु ने उनको बोया वह शैतान है**।'' शैतान को बिल्कुल सही ढंग से ''शत्रु'' के रूप में वर्णित किया गया है (देखें लूका 10:19; 1 पतरस 5:8)। वह परमेश्वर के लोगों को

बिगाड़ने और नष्ट करने के तरीके ढूंढ़ने की कोशिश करते हुए योजनाएं बनाता रहता है।

6. **''कटनी जगत का अन्त है।''** कटनी को पवित्र शास्त्र में आमतौर पर न्याय के रूपक के तौर में इस्तेमाल किया गया है। ''अन्त'' (*sunteleia*) का अनुवाद ''समापन'' या ''पूर्णता'' भी हो सकता है (देखें 13:40, 49; 24:3; 28:20)। इस संसार में ''राज्य की सन्तान'' को न्याय के दिन अन्तिम निर्णय तक ''दुष्ट की सन्तान'' के साथ रहना होगा।

7. **''काटने वाले स्वर्गदूत हैं।''** पवित्र शास्त्र में कहीं और स्वर्गदूतों को न्याय करने के लिए परमेश्वर के प्रतिनिधियों के रूप में दिखाया गया है (24:31; प्रकाशितवाक्य 14:14-20)।

आयतें 40-42. यहां पर यीशु ने **जंगली दाने** के भविष्य में जो बटोरे जाते और जलाए जाते, और दुष्ट की सन्तान में, जिनका न्याय **जगत के अन्त में** होता, जर्बदस्त समानता बनाई। कटनी के दिन वापस आकर प्रभु **अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा** (देखें 16:27; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7) कि वे **उसके राज्य** अर्थात ''संसार'' **में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करने वालों को इकट्ठा करेंगे**। इन दुष्टों को इकट्ठा किया जाएगा और उन्हें **आग के कुण्ड में** डाल दिया जाएगा (देखें दानिय्येल 3:6; प्रकाशितवाक्य 20:10, 14, 15)। यह कुण्ड नरक, या ''गेहन्ना'' (*gehenna*) जहन्नुम अर्थात कभी न बुझने वाली ''अनन्त आग'' का स्थान है (25:41; देखें मरकुस 9:44)। मत्ती में न्याय को दर्शाने के लिए आग का इस्तेमाल बार-बार हुआ है (3:10; 5:22; 7:19; 13:40, 42; 18:8, 9; 25:41)। दुष्ट लोग सन्ताप के स्थान में होंगे, जहां **रोना और दांत पीसना होगा** (देखें 8:12; 22:13)।

आयत 43. यीशु ने न्याय के इस विचारोत्पादक दृष्टांत को एक आशावादी टिप्पणी के साथ समाप्त किया: **''उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे''** (देखें 25:34; 1 कुरिन्थियों 15:24)। अनन्त नगर में धर्मी लोग ''सूर्य'' की तरह चमकेंगे (देखें दानिय्येल 12:3; प्रकाशितवाक्य 21:23; 22:5)। फिर यीशु ने अपने सुनने वालों को चौकस किया, ''जिसके कान हों वह सुन ले'' (13:9 पर टिप्पणियां देखें)।

स्वर्ग के राज्य पर तीन और दृष्टांत (13:44-50)

छिपा हुआ खज़ाना (13:44)

44**''स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाया और छिपा दिया और मारे आनन्द के जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस खेत को मोल ले लिया।''**

आयत 44. यीशु ने **स्वर्ग के राज्य** पर तीन और दृष्टांत दिए (13:44-50)। पहले दृष्टांत में, राज्य की तुलना एक **मनुष्य** से की गई है, जिसे **खेत में छिपा हुआ धन** मिला। उस ज़माने में लोग आम तौर पर अपनी कीमती चीज़ें ज़मीन में छिपा देते थे (25:25)। ऐसा ''विशेषकर संकट और बलवे के समयों में होता था।''[12] पहली सदी के फलस्तीन में बेकाबू भ्रष्टाचार के साथ अपराधियों और विद्रोहियों के आतंकी दलों के भय से लोग अपना खज़ाना भूमि में गाड़ देते

थे। कुमरान की खोजों से इसका पता मिलता है।[13] कुमरान में मिले ताम्बे के पत्रों में फलस्तीन में छिपने के चौंसठ स्थान बताए गए हैं, जहां सोना, चांदी, सुगंधित वस्तुएं और पत्रों सहित अन्य चीज़ें दबाए जाने की बात थी।

यीशु ने यह नहीं बताया कि इस दृष्टांत वाले आदमी को खज़ाने पर ठोकर कैसे लगी। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि वह खज़ाने की तलाश में था, इसलिए अवश्य ही उसे यह अचानक मिला होगा। खज़ाना पाकर उस आदमी ने इसे **छिपा दिया** ताकि किसी और को इसका पता न चल पाए। **आनन्द से भरे हुए** उस ने जाकर अपनी सम्पत्ति को बेचा और उस **खेत** को खरीद लिया।

पहली नज़र में, ऐसा लग सकता है कि यीशु आत्मिक सबक सिखाने के लिए एक अनैतिक व्यवहार का इस्तेमाल कर रहा था (देखें लूका 16:1-9)। यह निष्कर्ष निकालने से पहले तीन बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। पहला तो यह कि यह सम्भव है कि यह खेत एक मुक्त अवसर था। उस का मूल स्वामी अब जीवित नहीं था और खज़ाने की बात भूली जा चुकी थी।[14] दूसरा, पाने वाला खेत को और इसके बीच की चीज़ों को खरीदकर कानून के भीतर काम कर रहा था। बाद में रब्बियों ने बहस की कि वास्तव में खेत की खरीद में क्या था। स्वामी खेत को ''और इसके बीच की सब चीज़ों को'' बेचने पर सहमत हो सकता था।[15] तीसरा विचार यह तथ्य है कि उस आदमी में अपने ईमानदार होने की सूझ थी। वरना वह पहली बार मिलने पर ही खज़ाना मिलने के बाद भाग गया होता। इसके बजाय उस ने खेत को खरीदना चाहा ताकि खज़ाना कानूनी तौर पर उस का हो जाए।[16]

हम इस आदमी की नैतिकता पर आवश्यकता से अधिक परेशान होकर दृष्टांत के वास्तविक अर्थ को खोना नहीं चाहेंगे। प्रभु की मुख्य बात स्वर्ग के राज्य के महत्व से जोड़ना है। सौभाग्यशाली उस खेत को पाने के लिए जिसमें उसे खज़ाना मिला था, अपना सब कुछ बलिदान करने को तैयार था। यही बात उस व्यक्ति पर लागू होती है, जो परमेश्वर के राज्य की महानता को समझ लेता है। इसे पाने के लिए किसी के लिए भी कोई भी कीमत बहुत बड़ी नहीं है (6:33; लूका 18:28-30; फिलिप्पियों 3:8, 9)।

अनमोल (13:45, 46)

[45]''फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है, जो अच्छे मोतियों की खोज में था। [46]जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उस ने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया।''

आयतें 45, 46. फिर यीशु ने **राज्य** की तुलना **एक व्यापारी** से की, जो **अच्छे मोतियों की खोज में था**। ''अच्छे मोती'' बाइबल के समय के सबसे कीमती मोतियों में माने जाते थे (अय्यूब 28:18; मत्ती 7:6; 1 तीमुथियुस 2:9; प्रकाशितवाक्य 17:4; 18:11, 12, 16, 17; 21:21)।[17] घोंघे के अन्दर बनने के कारण मोतियों को आमतौर पर गोताखोरों द्वारा लाल समुद्र और फारस की खाड़ी में से निकाला जाता था। इस कहानी वाला ''व्यापारी'' (*emporos*) ''परचून विक्रेता'' (*kapēlos*) के विपरीत एक ''थोक का व्यापारी'' था।[18] अपने कारोबार के लिए उसे दूर-दूर तक जाना पड़ता था। अच्छे मोतियों को खरीदकर बेचने की अपनी खोज

में उसे **एक बहुमूल्य मोती मिला**। यह इतना मूल्यवान था कि उस ने **अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया**।

पिछले दृष्टांत की तरह ही (13:44) यह कहानी भी प्रभु के राज्य के ज़बर्दस्त मूल्य को बताती है। दोनों दृष्टांतों में अन्तर यह है कि पहले वाले आदमी को खज़ाना (राज्य) अचानक मिल गया था, जबकि वह वास्तव में इसकी खोज में नहीं था। उसके लिए, खज़ाना मिलना एक आश्चर्य था। दूसरा व्यक्ति मोतियों की तलाश में था इस कारण वह बहुमूल्य मोती (राज्य) के मिलने पर इतना हैरान नहीं हुआ, पर वह खुश अवश्य हुआ। दोनों दृष्टांतों में मेल खाती बात यह है कि दोनों ही इतने बड़े खज़ाने को पाने के लिए अपना सब कुछ बलिदान करने को तैयार थे।

जाल (13:47-50)

[47]''फिर स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है, को जो समुद्र में डाला गया, और हर प्रकार की मछलियों को समेट लाया। [48]और जब जाल भर गया तो मछुए उसको किनारे पर खींच लाए, और बैठकर अच्छी-अच्छी को बर्तनों में इकट्ठा किया और निकम्मी-निकम्मी फैंक दीं। [49]जगत के अन्त में ऐसा ही होगा; स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे। [50]जहां रोना और दांत पीसना होगा।''

आयतें 47, 48. इस समूह में **राज्य** के तीसरे दृष्टांत (13:44-50) में **बड़े जाल** की बात है **जो समुद्र में डाला गया**।''बड़े जाल'' के लिए यूनानी शब्द (*sagēnē*), जिससे अंग्रेजी शब्द (seine) लिया गया है, ऊपरी भाग में लगे कारकों और नीचे भारी भाग वाले मछली पकड़ने के बड़े-बड़े जालों की बात है। इसे दो नावों के बीच या एक नाव और तट के बीच बांधा जा सकता था। इस जाल में कई क्विंटल मछली पकड़ी जा सकती थी।

इस दृष्टांत में जब जाल को डाला गया तो हर प्रकार की मछलियों को पकड़ा गया था। पकड़ी गई मछलियों को किनारे पर लाया गया। जहां **अच्छी-अच्छी मछलियों** को **निकम्मी** मछलियों से अलग कर दिया गया था। विशेष शब्द ''निकम्मी'' (*sapros*) का अर्थ मूलतया ''खराब'' या ''गली हुई'' है। परन्तु प्रतीकात्मक अर्थ में यह उसके लिए हो सकता है जो ''बुरा,'' ''दुष्ट'' या ''दूषित'' हो। मछलियां ताज़ा थीं इस कारण ऐसा नहीं होगा कि वे मछलियां ''खराब'' या ''गली हुई'' हों।[19] इसके बजाय ''निकम्मी'' का अर्थ सम्भवतया वे मछलियां होंगी, जिन्हें यहूदियों को खाने की आज्ञा नहीं थी। इन अशुद्ध मछलियों के न तो पंख और न च्योंटे थे (लैव्यव्यवस्था 11:10, 11) और उन्हें शुद्ध मछलियों से आसानी से अलग किया जा सकता था। क्रेग एस. कीनर ने लिखा है, ''गलील की झील में से ली गई मछलियों की कम से कम चौबीस प्रजातियों में से बहुत सी मछलियां अशुद्ध या खाने अयोग्य थीं और पकड़ने के समय जाल में आ जाती थीं।''[20] निकम्मी मछलियां किसी काम की नहीं थीं, इस कारण मछुआरे आमतौर पर उन्हें फैंक देते थे। परन्तु अच्छी मछलियां बाजार में बेची जानी थी।

आयतें 49, 50. जंगली बीज वाले के दृष्टांत की तरह यह कहानी भी **जगत के अन्त** में न्याय से सम्बन्धित है (देखें 13:40)। एक बार फिर **दुष्टों** को **धर्मियों** से अलग करने की ज़िम्मेदारी **स्वर्गदूतों** की है (देखें 13:41)। यहां पर केवल दुष्टों को मिलने वाले दण्ड की बात

की गई है। स्वर्गदूत **उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे, जहां रोना और दांत पीसना होगा** (देखें 13:42)। न्याय का दिन सब साफ कर देगा कि राज्य के विश्वासयोग्य नागरिक कौन हैं और कौन नहीं।

गृहस्थ का दृष्टांत (13:51, 52)

[51]''क्या तुम ने ये सब बातें समझीं?'' उन्होंने उससे कहा, ''हां।'' [52]उस ने उनसे कहा, ''इसलिए हर एक शास्त्री, जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्थ के समान है, जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है।''

यह अन्तिम दृष्टांत इस बात पर ज़ोर देता हुआ प्रतीत होता है कि स्वर्ग के राज्य के लोगों को दूसरों को सिखाने के लिए किस प्रकार से तैयार होना चाहिए। बाद में उन्हें सुसमाचार को फैलाने के लिए जाने पर उन सब बातों में से लेना था, जो यीशु उन्हें सिखा रहा था।

आयत 51. किसी बात को सुनने से समझने में फर्क बात है। वास्तव में कोई व्यक्ति किसी बातचीत की एक-एक बात को सुन सकता है और इसे लगभग उसी प्रकार से दोहरा भी सकता है, परन्तु आवश्यक नहीं कि जो कुछ कहा गया था, वह उसे समझता भी हो। चेलों ने **ये सब बातें** जो यीशु ने उन्हें समझ पाने के लिए सिखाई थीं, मिला ली। उसके प्रश्न का उनके दृढ़ उत्तर से यह पता चलता है कि उन्होंने ऐसा किया।

आयत 52. इस आयत में अध्याय का अन्तिम दृष्टांत है और इसका संक्षिप्त अर्थ हमें चुनौती देता है। **यीशु हर एक शास्त्री** की बात कर रहा था **जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना**। ''शास्त्री'' उसे कहा जाता था, जो पुराने नियम की प्रति बनाता था। ऐसा करना मात्र ही उसे पवित्र शास्त्र का ज्ञानी बना देने वाला होना था। फिर ''चेला'' बनकर शास्त्री ने यीशु की शिक्षाओं को सीख लेना था (देखें 8:19; प्रेरितों 4:13)। प्रभु ने ऐसे व्यक्ति की तुलना **उस गृहस्थ** से की **जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है**। यूनानी भाषा का शब्द (*thēsauros*) ''भण्डार'' या इसके रखे जाने वाली चीज़ की बात करता है, चाहे वह ''भण्डारगृह'' हो या ''गोदाम'' (2:11 पर टिप्पणियां देखें; 6:19; 12:35)। ''पुराना'' भण्डार पुराने नियम की सच्चाइयों को दर्शाता है जबकि, ''नया'' यीशु की नई शिक्षाओं के भण्डार को।

❖❖❖❖❖ सबक ❖❖❖❖❖

सुसमाचार का खमीर (13:33)

यीशु ने खमीर का दृष्टांत बिना व्याख्या के बताया, परन्तु खमीर की विशेषताओं के कारण हम समझ सकते हैं कि उस की शिक्षा क्या थी।

1. *खमीर गुंधे हुए आटे में अपने आप काम करता है,* इसी प्रकार मसीह का आत्मा हृदय में काम करता है। वही आत्मा जो आज हमारे मनों में वास करता है आरम्भिक मसीही लोगों को सारे संसार में सुसमाचार प्रचार करने के लिए जाने को उकसाता था। भले और अच्छे मनों में बोया गया सुसमाचार लोगों के जीवनों को बदल देता है।

2. *खमीर होने की प्रक्रिया धीमी है।* सुसमाचार का खमीर हर मसीही के जीवन में होना चाहिए और इसे हर व्यक्ति के मन से दूसरे के मन में बाहर जाना चाहिए। सुसमाचार कोई ज्वालामुखी नहीं है, जो अचानक सदमे की तरह निकले, बल्कि यह धीरे-धीरे और लगातार काम करता है।

3. *खमीर आटे में अपने आप नहीं बनता; इसे डाला जाना आवश्यक है।* सुसमाचार का खमीर मनुष्य की उपज नहीं है, बल्कि यह तो पाप के लिए ईश्वरीय उपचार है (याकूब 1:21)। सुसमाचार को मसीही लोगों के द्वारा संसार में ले जाना आवश्यक है (28:18-20)। यह तुरन्त वैसे ही काम आरम्भ कर सकता है, जैसे आटे में खमीर करता है।

4. *दृष्टांत वाला खमीर केवल एक जगह पर नहीं रखा गया था।* इसे आटे की तीन पसेरियों में रखा गया था। यही नियम सुसमाचार को फैलाने में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। मण्डली को हर समाज में बोया जाना चाहिए, ताकि परमेश्वर का उद्धार का संदेश अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सके।

राज्य की कीमत (13:44-46)

13:44-46 में यीशु द्वारा दिए गए दो दृष्टांतों से स्वर्ग के राज्य की कीमत का पता मिलता है। हमें ऐसे सबक की क्यों आवश्यकता है? इसके कुछ कारण ये हैं:

1. *इसका मूल्य इसकी कीमत से ठहराया जाता है।* राज्य, कलीसिया अब तक का बनाया गया, सबसे महंगा संस्थान है। इसकी स्थापना के लिए मसीह के बहुमूल्य लहू की आवश्यकता थी (1 पतरस 1:18, 19)।

2. *इसका मूल्य इसके लाभों के द्वारा दिखाया जाता है।* यह ध्यान में रखते हुए कि हम अन्य बातों का मूल्यांकन कैसे करते हैं, आइए अपने आपसे पूछते हैं, ''उन लोगों के लिए जो कलीसिया में हैं इसके क्या लाभ हैं?''

3. *इसका मूल्य उसके द्वारा ठहराया जाता है जो इसका मालिक है।* कलीसिया का मालिक मसीह है जिसने इसे बनाने की प्रतिज्ञा की (16:18, 19), और अन्त के दिन वह इसे पिता को सौंप देगा (1 कुरिन्थियों 15:24)।

4. *इसका मूल्य इसके मिशन के द्वारा दिखाया जाता है।* कलीसिया का मिशन संसार को सुसमाचार बताना है, दूसरों को मसीह के पास अनन्त उद्धार के लिए लाना है।

5. *इसका मूल्य इसके भविष्य के द्वारा जाना जाता है।* कलीसिया के विश्वासयोग्य सदस्यों को मसीह के सामने पेश किया जाएगा और वे उसके साथ शासन और न्याय करेंगे (1 कुरिन्थियों 6:2; इफिसियों 5:26, 27)। कलीसिया से फिर जाने वाले लोग अनन्तकाल में परमेश्वर की उपस्थिति से फिर जाएंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:9; 1 पतरस 4:17)।

छिपे हुए खज़ाने का दृष्टांत (13:44)

छिपे हुए खज़ाने के दृष्टांत से हमारे लिए तीन महत्वपूर्ण सबक मिलते हैं।[21]

1. *खज़ाना।* स्वर्ग का राज्य सबसे बड़ा खज़ाना है। यह किसी की सारी सम्पत्ति और ऊर्जा से महंगा है। इसकी कीमत किसी से नहीं मिलाई जा सकती।

2. *बलिदान।* छिपा हुआ खज़ाना पाकर उस आदमी ने इसे पाने के लिए अपना सब कुछ दे दिया। राज्य के लोग बनने के लिए हर बलिदान देने को तैयार होना आवश्यक है। शिष्यता अपना इनकार करने की मांग करती है (16:24)।

3. *आनन्द।* वह आदमी खज़ाने की अत्यधिक कीमत के कारण खेत को खरीदने के लिए अपना सब कुछ बेचने के लिए खुश था। जब किसी को सचमुच में मसीह और उसके राज्य के बड़े खज़ाने की समझ आ जाती है तो वह चेला बनने के लिए किए गए बलिदानों से खेदित नहीं होता। इसके विपरीत वह राज्य का भाग होने के सौभाग्य पर आनन्द करता है।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]*न्यू बाइबल डिक्शनरी,* दूसरा संस्क., संपा. जे. डी. डग्लस एंड नॉरमन हिल्लेर (व्हीटन, इलिनोयस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1982), 948 में एफ. एन. हेपर, ''प्लांट्स।'' [2]मिशनाह *टोहरोथ* 8.8; देखें *निडाह* 5.2. [3]टालमुड *केटुबोथ* 111बी। [4]डब्ल्यू. एफ. अल्ब्राइट एंड सी. एस. मन्न, *मैथ्यू,* द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे एंड कं., 1971), 169. [5]*एनोक* 90.30, 33, 37. [6]देखें लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 353. [7]क्रेग एस. कीनर, द *आईवीपी बाइबल बैक्ग्राउंड कमैंट्री* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1993), 84. [8]कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में भविष्यवक्ता विशेषकर ''यशायाह'' को दिखाया गया है, परन्तु स्पष्टतया यह गलत है। ब्रूस एम. मेज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* दूसरा संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 27 में चर्चा देखें। [9]भजनकार दाऊद को भी प्रेरितों 2:29, 30 में ''भविष्यवक्ता'' कहा गया है। [10]ऍंडी क्लोर, *साम्स 51-89,* टुथ फ़ॉर टुडे कमैंट्री (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2006), 484.

[11]कुछ हस्तलिपियों में ''संसार का'' नहीं है (मेज़गर, 28)। [12]अल्ब्राइट एंड मन्न, 170. [13]डेविड हिल, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 238. [14]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, द *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, ऑरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 124. [15]मिशनाह *बाबा बथरा* 4.8, 9. [16]रब्बी लोग इस पर भी बहस करते थे कि ढूंढ़कर पाने वाला उन चीज़ों को अपने पास रख सकता है। (टालमुड *बाबा मेज़िया* 25ए; जेरूसलेम टालमुड *बाबा मेज़िया* 2.5.) [17]अल्ब्राइट एंड मन्न, 170. [18]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 325. [19]वही, 913. [20]कीनर, *मैथ्यू,* 392.

[21]नील आर. लाइटफुट, *लैसन्स फ्राम द पैरैबल्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1965), 40-41 से लिया गया।